उत्तरांचल दीप

संपादकीय

धर्म से न जोड़ें

भारत में जो व्यक्ति हज करके लौटता है, उसके नाम के आगे सम्मान के तौर पर हाजी शब्द लगाया जाता है। उसे मुस्लिम ही नहीं हिन्दू भी सम्मान के साथ हाजी साहब कहकर पुकारते हैं। ऐसे तीर्थ स्थल पर हमले के बारे में सोचना भी घोर पाप है।

सऊदी अरब की पवित्र मक्का मस्जिद अलहराम पर आतंकी हमले की साजिश नाकाम कर दी गई। ईद के मौके पर खूनखराबा करने के लिए मस्जिद से सिर्फ दो सौ मीटर दूर स्थित इमारत में आत्मघाती हमलावर छिपे हुए थे। सऊदी अरब के गृह मंत्रालय को सूचना मिलने पर सुरक्षा कर्मियों ने इमारत को घेर लिया तो आत्मघाती आर्तकियों ने खुद को उड़ा लिया और इमारत तेज धमाके के साथ ध्वस्त हो गई। इस घटना के बाद एक बार फिर साबित हो गया कि आर्तकियों को किसी धर्म विशेष से जोड़ना और धर्म के लिए समर्पित मानना भ्रम है। खासकर भारत के युवा अपनी आंखें खोलें। सोशल मीडिया पर आतंकी संगठन इस्लामिक स्टेट की वेबसाइट से प्रभावित होकर आतंकी बनने का जुनून छोड़ें। होली, दीपावली और हिन्दुओं के अन्य त्योहार भारत और विदेश में बसे कुछ हिन्दू मनाते हैं। लेकिन ईद दुनियाभर के दर्जनों मुस्लिम देश के अरबों लोग मनाते हैं। मुस्लिमों का सबसे महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल, आस्था का केन्द्र मक्का मस्जिद अलहराम है। करोड़ों लोग दुनियाभर के देशों से हज करने जाते हैं। भारत में जो व्यक्ति हज करके लौटता है, उसके नाम के आगे सम्मान के तौर पर हाजी शब्द लगाया जाता है। उसे मुस्लिम ही नहीं हिन्दू भी सम्मान के साथ हाजी साहब कहकर पुकारते हैं। ऐसे तीर्थ स्थल पर हमले के बारे में सोचना भी घोर पाप है। लेकिन आर्तकियों ने ईद के मौके पर वहां भी खूनखराबा करने की साजिश रच डाली। मक्का मस्जिद अलहराम की हिफाजत और उसकी पवित्रता अक्षुण्ण रखना सिर्फ सऊदी अरब सरकार और वहां के सुरक्षा कर्मियों की ही जिम्मेदारी नहीं है। दुनिया के मुस्लिमों और अन्य धर्मों के अनुयायियों को भी ऐसे आस्था के केन्द्र को सुरक्षित रखना अपना कर्तव्य समझना चाहिए। दुनिया के सभी धर्म मानवता की सीख देते हैं। किसी भी धर्म में हिंसा, अन्याय को स्थान नहीं दिया गया है। धर्म के कथित ठेकेदारों ने अपने निजी स्वार्थ के कारण धार्मिक मतभेद पैदा कर दिये हैं। सभी धर्मों के तीर्थ स्थलों की रक्षा करना भी सभी धर्मों के अनुयायियों की जिम्मेदारी है। सऊदी अरब में भारत की तरह विभिन्न धर्मों के अनुयायी नहीं हैं। वहां तो मुस्लिम ही बहुसंख्यक हैं। इसके बाद भी पवित्र मक्का मस्जिद में खूनखराबे की साजिश का अंजाम देने का दुस्साहस किया गया। रमजान को तो पवित्र महीना माना जाता है। इस महीने में रोजा रखने वाले झूठ बोलने तक को पाप समझते हैं। इसके अलावा परिस्थितिवश जो लोग रोजा नहीं रखते वह भी बुराइयों को त्याग कर धार्मिक भावना को आत्मसात करते हैं। लेकिन अफसोस की बात है कि रमजान के पवित्र महीने में भी दुनिया में अनेक जगह आर्तकियों ने खूनखराबा किया। आतंकी संगठनों के सरगना धर्म की लम्बी-चौड़ी बातें करते हैं। लेकिन अमानवीयता की पराकाष्ठा तक पहुंच जाते हैं। ऐसे लोगों का खात्मा करना ही उचित होगा। पाकिस्तान में सबसे अधिक आतंकी संगठन पनाह लिये हुए हैं। भारत ने अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर पाकिस्तान के आतंकी चेहरे को बेनकाब किया है। जब मक्का मस्जिद की सुरक्षा को भी खतरा उत्पन्न हो गया तो दुनिया भर के देश एकजुट होकर धर्म के नाम पर आतंक फैलाने वालों का खात्मा करने का बीड़ा उठायें।

'सेक्स गुलाम औरतों' की अंधेरी दुनिया

कीनिया में इस्लामी चरमपंथी संगठन अल शबाब के लड़ाकों का घिनौना चेहरा उजागर

केवल चरमपंथ की ओर आकर्षित लड़के ही पड़ोसी सोमालिया में अल शबाब चरमपंथियों के साथ शामिल नहीं हो गए बल्कि इस ग्रुप की ओर से महिलाओं का अपहरण और उन्हें सेक्स स्लेव के रूप में तस्करी भी की गई। सलामा ने पड़ताल बहुत गोपनीय तरीके से की, क्योंकि सरकारी सुरक्षा बलों को संदेह होने का डर था। वह मोमबासा और इसके आसपास के इलाकों में इन महिलाओं से गोपनीय तरीके से मिलीं और गायब हुए पुरुष रिश्तेदारों के बारे में जानकारियां हासिल कीं।

कई पुरुष आए और सेक्स के लिए मजबूर किया। मैं नहीं बता सकती, वह कितने थे। कीनिया में इस्लामी चरमपंथी संगठन अल शबाब की ओर से अगवा की गई महिलाओं में से एक ने ये बयान दिया है। इन महिलाओं को सेक्स स्लेव (सेक्स के लिए गुलाम बनाए गए) के रूप में सोमालिया ले जाया गया था। कीनिया की रहने वाली सलामा अली ने जब अपने दो छोटे भाईयों के गुमशुदा होने की तहकीकात की तब इन महिलाओं की कहानी सामने आई। उन्हें पता चला कि केवल चरमपंथ की ओर आकर्षित लड़के ही पड़ोसी सोमालिया में अल शबाब चरमपंथियों के साथ शामिल नहीं हो गए बल्कि इस ग्रुप की ओर से महिलाओं का अपहरण और उन्हें सेक्स स्लेव के रूप में तस्करी भी की गई। सलामा ने पड़ताल बहुत गोपनीय तरीके से की, क्योंकि सरकारी सुरक्षा बलों को संदेह होने का डर था। वह मोमबासा और इसके आसपास के इलाकों में इन महिलाओं से गोपनीय तरीके से मिलीं और गायब हुए पुरुष रिश्तेदारों के बारे में जानकारियां हासिल कीं। सलामा कहती हैं, हमने पाया कि वहां हममें से कई महिलाएं थीं। उन्हें कुछ ऐसी महिलाएं भी मिलीं जिन्हें जबरदस्ती सोमालिया ले जाया गया। इन में उम्रदराज और बूढ़ी, ईसाई और मुस्लिम, मोमबासा और कीनिया के अन्य तटीय इलाकों से आने वाली महिलाएं शामिल थीं। उन्हें कस्बे और विदेशों में ऊंची वेतन वाली नौकरियों का लालच दिया गया और फिर उनका अपहरण कर लिया गया। पिछले सितम्बर में सलामा ने काउंसलर की ट्रेनिंग ली और वापस आने वाली महिलाओं के लिए एक सीक्रेट सपोर्ट ग्रुप स्थापित किया। जब ये बात महिलाओं को पता चली तो कई महिलाओं ने उनसे सम्पर्क किया। कुछ के बच्चे हो गए थे, कुछ को एचआईवी संक्रमण हो गया था और कुछ मानसिक अवसाद में चली गई थीं। ये सभी खुले तौर पर बोलने से डरी हुई थीं क्योंकि उनपर अल शबाब का समर्थक होने का संदेह हो सकता था सलामा बताती हैं कि वह अंधेरे कमरे में इन महिलाओं से मिलीं। उसने बताया, उन तीन सालों में, जो भी आता था, मेरे साथ सोने आता था। एक दूसरी महिला ने बताया, वह हर रात एक महिला के लिए दो या तीन आदमियों को लेकर आते थे। ऐसा लगता है कि कुछ महिलाओं को अल शबाब चरमपंथियों की पत्नी बनने को मजबूर किया गया, जबकि बाकियों को वेश्यालय में गुलाम की तर कैद किया गया था। अल शबाब सोमालिया में कट्टरपंथी इस्लामिक स्टेट बनाने की लड़ाई लड़ रहा है और उसने उन पड़ोसी देशों पर भी हमले करना शुरू कर दिया है, जिन्होंने अफ्रीकन यूनियन फोर्स के रूप में अपने जवानों को उनसे लड़ने के लिए भेजा है। कीनिया अल शबाब के हमलों का सामना कर रहा है और इसकी सेना सोमालिया की सीमा से घने बोनी जंगल में चरमपंथियों की तलाश कर रही है। मीडिया ने ऐसी 20 महिलाओं के साथ बात की और सबने कहा कि उन्हें इन घने जंगलों में कैद करके रखा गया या उन्हें यहां से ले जाया गया। सलामा से मिलने वाली एक महिला फेथ हाल ही में अल शबाब के चंगुल से भाग कर लौटी हैं। जब वह 16 साल की थीं उन्हें एक बुजुर्ग दंपत्ति ने मालिंदी और बाद में तटीय इलाके में नौकरी का लालच दिया। अगले दिन वह 14 अन्य यात्रियों के साथ बस में सवार हुईं, जहां सबको पानी में नशीला पदार्थ दिया गया। वह बताती हैं, जब होश आया, उन्होंने खुद को एक कमरे में पाया जहां दो आदमी मौजूद थे। उन्होंने आंखों पर पट्टियां बांध दीं और उसी कमरे में रेप किया। उन्हें फिर से नशीला पदार्थ दिया गया। फेथ को जब होश आया तो उन्होंने खुद को घने जंगल में पाया और बताया गया कि अगर उन्होंने भागने की कोशिश की तो उन्हें मार दिया जाएगा। तीन साल तक उन्होंने अल शबाब के लंबी लंबी दाढ़ी रखने वाले लड़ाकों के लिए खाना पकाते हुए गुजारा। बलात्कार की वजह से वह प्रेगनेंट भी हुईं और उस जंगल में अकेले ही अपने बच्चे को जन्म दिया। वह बताती हैं, मेरी दादी परंपरागत दाई थीं, इसलिए मुझे इसके बारे में कुछ जानकारी थी। मैं जंगल में प्रसव से अकेली जूझती रही। आखिरकार जब जड़ी बूटी खोजने वाले लोग आए तो उनके सहारे वह अपनी बेटी के साथ भागने में कामयाब रहीं। कई महिलाएं अल शबाब की कैद में रहती हुई मां बनीं। पूर्व अल शबाब लड़ाके की पत्नी सारा कहती हैं कि ये कोई संयोग नहीं था। वह कहती हैं कि चरमपंथियों की एक नई पीढ़ी पैदा करने के लिए यह एक व्यवस्थित योजना का हिस्सा था, क्योंकि सोमालिया के कैंपों में रह रहे लोगों की भर्ती करना आसान नहीं है और बच्चों को आसानी से चरमपंथी बनाया जा सकता है। वह कहती हैं, मेरे कैंप में ऐसी महिलाएं थीं जिन्हें अन्य महिलाओं को भर्ती करने के लिए भेजा गया था। वह अपनी संख्या बढ़ाना चाहते थे, इसलिए वह बच्चे पैदा करने के लिए औरतें चाहते थे। उन्होंने बताया कि उनके कैंप में 300 कीनियाई महिलाएं थीं। एक अन्य महिला एलिजाबेथ की बहन को दो साल पहले सऊदी अरब में नौकरी का लालच दिया गया। एक महीने बाद उसने एलिजाबेथ से बात की, उसने बताया कि वह सोमालिया में अल शबाब के एक कैंप में बहुत बुरी हालत में है। कीनिया की सरकार का कहना है कि उसे इस समस्या की जानकारी है लेकिन महिलाएं सामने नहीं आ रही हैं इसलिए ये कितनी बड़ी समस्या है, इसके बारे में अनुमान लगाना कठिन है।

-शैरलोट एटवूड

जीवन की सीख

बलराम ने रुक्मिणी के मन के भाव समझ लिए। उन्होंने श्रीकृष्ण को समझाया कि रुक्मी के साथ ऐसा व्यवहार नहीं करना था। वह तुम्हारी पत्नी का भाई है, परिजन है।

नई बहू के साथ ऐसा व्यवहार होना चाहिए कि उसका मन कम समय में ही पति के घर और परिवार को अपना मान ले। भागवत के एक प्रसंग से इस बात को समझ सकते हैं। भगवान श्रीकृष्ण रुक्मिणी का हरण करके भागे। रुक्मिणी के भाई रुक्मी ने उनका पीछा किया और श्रीकृष्ण को युद्ध के लिए आमंत्रित किया। भगवान श्रीकृष्ण ने रुक्मी से घमासान युद्ध किया और उसे पराजित कर दिया। जब भगवान रुक्मी को मारने लगे तब रुक्मिणी ने उन्हें रोक दिया। भाई की जान बचा ली। फिर भी श्रीकृष्ण ने उसे आधा गंजा करके और आधी मूंछ काटकर कुरूप कर दिया। रुक्मिणी इस पर कुछ नहीं बोली, वह उदास हो गई। बलराम ने रुक्मिणी के मन के भाव समझ लिए। उन्होंने श्रीकृष्ण को समझाया कि रुक्मी के साथ ऐसा व्यवहार नहीं करना था। वह तुम्हारी पत्नी का भाई है, परिजन है। बलराम ने रुक्मिणी से हाथ जोड़कर माफी मांगी। उन्होंने रुक्मिणी से कहा कि तुम्हारा भाई हमारे लिए आदरणीय है और श्रीकृष्ण द्वारा किए गए व्यवहार के लिए मैं क्षमा मांगता हूं। तुम उस बात के लिए अपना मन मैला मत करना। ये परिवार अब तुम्हारा भी है, इसे पराया मत समझना। तुम्हारे भाई के साथ हुए दुर्व्यवहार के लिए मैं तुमसे माफी मांगता हूं। इस बात से रुक्मिणी की उदासी जाती रही। वह यदुवंश में घुल मिल कर रहने लगी और उसी परिवार को अपना सबकुछ मान लिया। नई बहू को जिम्मेदारी दें, लेकिन उनसे सिर्फ अपेक्षाएं ही न रखी जाएं, उन्हें आदर-सम्मान और अपनापन भी दिया जाए। नई बहू के आते ही अपने घर के अनुशासन में भी थोड़ा बदलाव करें, जिससे वह अपने आप को उस माहौल में ढाल सके।

हेयर डिजाइनर बनकर भी कमा सकते हैं लाखों

देश में कई ऐसे मशहूर ब्यूटीशियन और हेयर डिजाइनर हैं जिन्होंने अपने कॅरियर की शुरुआत एक मामूली इंसान की तरह की लेकिन अपनी लगन और मेहनत के बल पर भारी शोहरत और दौलत कमायी।

यदि आप दुनिया से अलग हटकर कुछ करना चाहते हैं। खुद को अलग दिखाना चाहते हैं, साथ ही दूसरों की भी अलग पहचान बनाना चाहते हैं तो कुछ हटकर कीजिए। जी हां, कॉस्मेटिक विशेषज्ञ बनिए और पहचान-प्रतिष्ठा पाइए। इसे आम बोलचाल की भाषा में ब्यूटीशियन भी कहा जाता है। एक सौंदर्य विशेषज्ञ का काम लोगों की सुंदरता को निखारना होता है। जाहिर है इसकी कीमत चाहे जितनी मिले, कम ही लगती है। देश में कई ऐसे मशहूर ब्यूटीशियन और हेयर डिजाइनर हैं जिन्होंने अपने कॅरियर की शुरुआत एक मामूली इंसान की तरह की लेकिन अपनी लगन और मेहनत के बल पर भारी शोहरत और दौलत कमायी। इनमें शहनाज हुसैन, जावेद हबीब, ब्लोसम कोचर, वंदना लूथरा और अंबिका पिल्लै जैसी हस्तियों को कौन नहीं जानता। इनके अलावा भी कई ऐसे सौंदर्य विशेषज्ञ हैं जो एक मामूली दुकान से बड़ी कंपनी खड़ा करने में कामयाब रहे। इस कारोबार से जुड़े लोगों की मानें तो आने वाले दिनों में इस व्यवसाय में भारी फायदा होने वाला है। शहनाज हुसैन को भारतीय सौंदर्य व्यवसाय का संस्थापक माना जाता है। उन्होंने 1977 में सबसे पहले ब्यूटीशियन पाठ्यक्रम की शुरुआत की और वूमेन वर्ल्ड इंटरनेशनल स्कूल खोला। एक कॉस्मोटिक विशेषज्ञ को सौंदर्य कला में निपुण और कुशल होना जरूरी है क्योंकि उसका काम चेहरे को नया लुक देने के साथ-साथ उसे स्वस्थ रखने का तरीका भी बताना होता है। इसके अलावा बाल, बॉडी-फिगर, डाइट, हेयर स्टाइल, मेकअप, हेयर रिमूवल, ऐनिकियोर, पेडिकियोर और मसाज करना होता है। ब्यूटीशियन कोर्स में दाखिले के लिए अभ्यर्थी को कम से कम इंटरमीडिएट पास होना जरूरी है। इसके अलावा अभ्यर्थी में वह हर गुण होना जरूरी है जो एक व्यवसायी में होता है। यह एक ऐसा क्षेत्र है जो भारत में अभी धीरे-धीरे फल-फूल रहा है। लिहाजा बाजार में हर रोज सौंदर्य-प्रसाधन का एक नया उत्पाद लांच किया जा रहा है। ऐसे में अभ्यर्थी में अच्छे प्रोडक्ट का चुनाव करने की क्षमता के अलावा कलर सेंस भी होना चाहिए। कॉस्मेटिक पाठ्यक्रम में दाखिला लेने वाले अभ्यर्थी को हेयर स्टाइल, बाल कटिंग, पर्मिंग, कलरिंग, ब्लीचिंग, हेयर ड्रेसिंग और स्टाइलिंग, त्वचा केयर, फेसियल, मेनिकियोर, पेडिकियोर और चेहरे, हाथ, पैर, गर्दन और बांह के मसाज के बारे में बताया जाता है। इसके अलावा ट्रेनिंग के दौरान अभ्यर्थी को इलेक्ट्रॉनिक औजारों को चलाना, रासायनिक पदार्थों के इस्तेमाल और उनके त्वचा पर पड़ने वाले प्रभाव के बारे में बताया जाता है। इसके साथ ही बेजान हो चुके बालों और त्वचा के उपचार के बारे में बताया जाता है। सफलतापूर्वक पाठ्यक्रम पूरा करने वाले अभ्यर्थी कभी खाली नहीं बैठते। उन्हें सैलून, स्कूल, टीवी चैनलों, ब्यूटी पार्लरों, हेल्थ क्लब, ब्यूटी सलाहकार, ब्यूटी थेरेपिस्ट, मीडिया हाउस में काम मिल जाता है। इसका डिप्लोमा, सर्टिफिकेट कोर्स और एडवांस डिप्लोमा पाठ्यक्रम उपलब्ध है। ज्यादा जानकारी के लिए इन संस्थानों से संपर्क कर सकते हैं- पिवोट पाइंट इंडिया, जे. ब्लॉक, कैलाश कालोनी, नई दिल्ली। हबीब हेयर अकादमी, साउथ एक्सटेंशन-2, नई दिल्ली। शहनाज हुसैन वूमेन वर्ल्ड इंटरनेशनल, ग्रेटर कैलाश-1 नई दिल्ली। वीएलसीसी अकादमी ऑफ ब्यूटी एंड हेयर, शालीमार बाग, दिल्ली। वाईडब्लूसीए, अशोक रोड, नई दिल्ली। साउथ दिल्ली पॉलिटेकनीक फोर वूमेन, लाजपत नगर, नई दिल्ली।

-अमित भंडारी

पद चिह्न

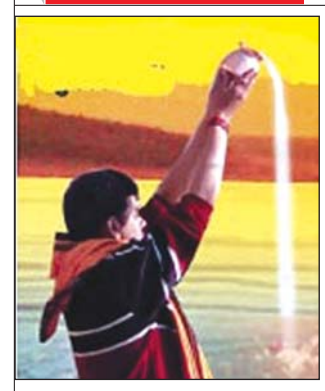

सूर्यदेव को जल चढ़ाने से सूर्यदेव प्रसन्न होते हैं। मनुष्य पर सूर्य का प्रकोप नहीं होता है। साथ ही उसके राशि दोष खत्म हो जाते हैं। सूर्योदय के समय सूर्य की किरणें ज्यादा तेज नहीं होती हैं, जो शरीर के लिए एक औषधि का काम करती हैं।

भारतीय परंपरा है कि सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल चढ़ाकर ही भोजन किया जाता है। आपको जानकर हैरानी होगी कि विज्ञान ने भी इसके कई फायदे गिनाए हैं। सूर्य को जल चढ़ाने की परम्परा बहुत पुराने समय से है। शास्त्रों के अनुसार सूर्यदेव को जल चढ़ाने से सूर्यदेव प्रसन्न होते हैं। मनुष्य पर सूर्य का प्रकोप नहीं होता है। साथ ही उसके राशि दोष खत्म हो जाते हैं। सूर्योदय के समय सूर्य की किरणें ज्यादा तेज नहीं होती हैं, जो शरीर के लिए एक औषधि का काम करती हैं। उगते सूर्य को जल चढ़ाते वक्त जल की धार में सूर्य दिखाई देता है। सूर्य की किरणें जल में से छनकर आंखों और शरीर पर पड़ती हैं। जिससे आंखों की रोशनी तेज होती है। इससे पीलिया, क्षय रोग और दिल की बीमारियों का खतरा कम होता है। सूर्य की किरणों से विटामिन-डी भी मिलता है। सुबह-सुबह सूर्य को जल चढ़ाने से शुद्ध ऑक्सीजन भी मिलती है। वहीं स्नान के बाद भोजन को धार्मिक नजरिए से अहम माना गया है। ये परंपरा भी सदियों पुरानी है। शास्त्रों के अनुसार बिना स्नान किये भोजन करना वर्जित है। शास्त्रों के अनुसार स्नान करके पवित्र होकर ही भोजन करना चाहिए। बिना स्नान किये भोजन करना पशुओं के समान है इसे अपवित्र माना गया है। ऐसा करने से देवी देवता अप्रसन्न हो जाते हैं। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से स्नान करने से शरीर की गंदगी निकल जाती है शरीर में नई ताजगी और स्फूर्ति आती है। स्नान करने के बाद स्वाभाविक रूप से भूख लगती है। उस समय भोजन करने से भोजन का रस शरीर के लिए पुष्टिवर्धक होता है।

इन बॉक्स

ऑनर किलिंग की घटनाएं रोकी जायें

महोदय,

कर्नाटक के बीजापुर जिले से ऑनर किलिंग का एक दिल दहलाने वाला मामला सामने आया है। एक मुस्लिम लड़की को दलित से शादी करने की कीमत जान देकर चुकानी पड़ी है। पीड़िता गर्भवती थी। उसकी शादी से नाराज परिजनों ने उसे पहले मारापीटा और फिर जिंदा जला दिया। इस मामले में केस दर्ज करके पुलिस ने चार आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। 21 वर्षीय बानु बेगम को अपने ही गांव के रहने वाले सायबन्ना शराप्पा से प्यार हो गया। सायबन्ना दलित और बानु मुस्लिम थी। इसलिए इस रिश्ते की बात सुनकर लड़की के परिजन भड़क उठे। उन लोगों थाने में लड़के के खिलाफ रेप केस दर्ज कराने की मांग कर दी। पुलिस ने जांच के बाद फर्जी आरोप पाने पर इस मामले को खारिज कर दिया। परिजनों के विरोध से तंग आकर प्रेमी युगल ने भाग कर शादी करने का फैसला कर लिया। दोनों भागकर गोवा चले गए। वहां सब-रजिस्ट्रार ऑफिस में एक-दूसरे से शादी कर ली। कुछ समय बीतने के बाद दोनों वापस गांव आ गए। उस समय बानो गर्भवती हो चुकी थी। प्रेमिका के परिजनों ने उसे चाकू से घायल कर जिंदा जला दिया। एक मुस्लिम लड़की को दलित से शादी करने पर जिंदा जला दिया। जबकि मुस्लिम युवा न जाने कितनी अन्य धर्म की लड़कियों को भगा ले जाते हैं। उनको भी क्या जिंद जला देना चाहिए? ऐसे मामले रोके जाने चाहिएं।

-हरीश सनवाल, हल्द्वानी।

नॉलेज बैंक

मौत का कारण बन सकता है च्यूइंगम का शौक

अगर आप रोजाना ब्रेड और च्यूइंगम खाते हैं तो जरा सावधान हो जाएं। क्योंकि यह आपकी जान भी ले सकता है। जी हां, यह पढ़कर संभवतः आपको आश्चर्य हो, पर एक हालिया अध्ययन की रिपोर्ट कुछ ऐसा ही दावा कर रही है। रिपोर्ट के अनुसार ब्रेड और च्यूइंगम में पाया जाने वाला तत्व कोलोन कैंसर की वजह बनता है, जिसकी वजह से समय से पहले ही व्यक्ति की मौत हो सकती है। नैनोइम्पैक्ट के जरनल में प्रकाशित इस अध्ययन की रिपोर्ट के अनुसार ब्रेड और च्यूइंगम में टाइटेनियम डाईऑक्साइड नाम का तत्व पाया जाता है। जो कोशिकाओं को तोड़ देता है। कोशिकाओं के टूटते ही पाचनतंत्र कमजोर पड़ जाता है और इसकी वजह से संक्रामक रोगों का खतरा बढ़ जाता है। यही नहीं टाइटेनियम डाईऑक्साइड पेट की कोशिकाओं का जाल तोड़कर शरीर के दूसरे हिस्सों में भी चला जाता है। यह अध्ययन बिंघमटन यूनिविर्सिटी के शोधकर्ताओं ने किया है। अध्ययनकर्ता ग्रेचेन माहलर ने बताया कि च्यूइंगम और ब्रेड में पाया जाने वाला टाइटेनियम डाईऑक्साइड ऐसा तत्व है, जिसकी धीरे-धीरे लत लग जाती है और इसे खाने वाले व्यक्ति को बार-बार इसकी क्रेविंग होती है। इसलिए बेहतर होगा कि आप आज और अभी से च्यूइंगम व ब्रेड खाना छोड़ दें।